दशवाँ पदवीदान समारोह

20 जनवरी, 2015

सम्माननीय राज्यपाल का उद्‌बोधन

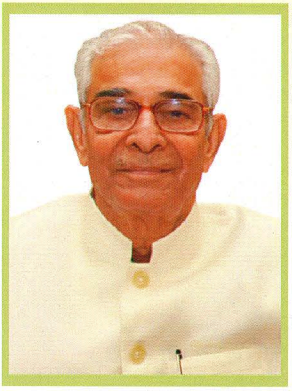

ओ.पी.कोहली

सम्माननीय राज्यपाल, गुजरात राज्य

॥ कृषिमूलम् जगत् सर्वम् ॥

जूनागढ कृषि विश्वविद्यालय

जूनागढ-362 001

सम्माननीय राज्यपाल,
श्री ओमप्रकाश कोहली का
उद्‌बोधन :

जूनागढ कृषि विश्वविद्यालय का दसवाँ दीक्षांत समारोह सम्पन्न होने की दिशा में जा रहा है । इस अवसर पर बहुत ही सारगर्भित और कोम्प्रीहेन्सीव भाषण अभी आपने श्री अरविन्द जी से सुना है । मंच पर कृषि जगत से जूडे हुए अनेक महानुभाव बैठे है । कृषि मंत्रीजी है, जिनका गुजराती में धाराप्रवाह भाषण आपने सुना, श्री जशाभाई बारड जी, इस विश्वविद्यालय के सम्माननीय कुलपति महोदय डॉ. ए.आर.पाठक जी है । श्री अरविन्द कुमार जी का जिक्र मैने किया । यहाँ के रजिस्ट्रार है श्री के.बी.जाडेजा जी । इस विश्वविद्यालय के स्नातकों को गढने और सँवारने में लगे हुए यहाँ के सभी शिक्षक हैं, फेकल्टी मेम्बर्स है । यहाँ की विभिन्न स्टेच्यूटरी बोडीज के सदस्य गण हैं, अभिवाहक हैं, छात्र-छात्राएँ हैं और विशेष रूप से आज के कार्यक्रम का केन्द्र बिंदु वे छात्र-छात्राए हैं जिनको अभी यहाँ पदवी प्राप्त हुई है और मेडल प्राप्त हुआ है । मैं सबसे पहले तो पदवी ग्रहण करनेवाले और मेडल ग्रहण करनेवाले छात्र-छात्राओं को बहुत बधाई देता हूँ, उनका अभिनन्दन करता हूँ । कृषि विश्वविद्यालय ऐसे प्रशिक्षित कृषि वैज्ञानिक तैयार कर रहे हैं, जो हमारे देश की कृषि व्यवस्था को मजबूत करेंगे और कृषि व्यवस्था मजबूत होगी तो उससे अर्थ व्यवस्था मजबूत होगी । अर्थ व्यवस्था के जो अन्य क्षेत्र है, चाहे उद्योग का क्षेत्र हो, सेवा का क्षेत्र हो, उसको भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में कृषि की मजबूती, मजबूत करती है । इसलिए ये ठीक ही कहा गया है की अर्थ व्यवस्था की रीढ कृषि व्यवस्था है । अब हमारी इस कृषि व्यवस्था के सामने चुनौतिया भी हैं, अवसर भी हैं, उन चुनौतियों और अवसरों का सामना उनको करना है, जो इस कृषि विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और शिक्षा प्राप्त करके निकल रहे हैं । लेकिन कुछ चिंताओं की बात भी है । एक चिंता तो ये हैं की हम अपने देश के एक महापुरुष को, जिन्होंने ग्राम स्वराज्य की बात कही हैं, कृषि की बात कहीं है, किसान की बात कहीं है उनके संदेश को हम लोग भूलते जा रहे हैं । गांधीजी ने ग्राम्य स्वराज्य की कल्पना रखी थी और उनका यह कहना था की भारत की सम्पूर्ण अर्थ व्यवस्था कहीं ना कहीं, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि के इर्द-गिर्द घूमेगी । पर अभी

अनुभव यह आता है की गाँवों के हमारे युवा लोग खेती-बाडी की ओर, कृषि की ओर आकर्षित नहीं हो रहे । अभी पिछले दिनों वाइब्रेंट गुजरात हुआ । वहाँ दो भाषण ऐसे हुए कि इसमें इस बात पर गहरी चिंता की गई हैं, कि हमारे गाँव के युवा, शिक्षित युवा कृषि की ओर आकर्षित नहीं हो रहें । एक पंजाब के प्रतिनिधि का भाषण था की इजराइल के प्रतिनिधि ने भाषण दिया था । इन भाषणों का हमें गंभीरता से विचार करना चाहिए । और वो यह है की गाँव का युवा खेती-बाडी के प्रति कैसे आकर्षित हो ? हम अपने खेतीबाडी के धंधे को, कृषि के धंधे को, कृषि के व्यवसाय को कैसे आकर्षित बनाए ? कैसे लाभकारी बनाए ? कैसे प्रतिष्ठा का व्यवसाय बनाये ? जिससे की युवा शक्ति उसकी ओर आकर्षित हो । अगर यह ना हुआ तो एक बहुत बडी कठीनाई उपस्थित हो शकती है और मुझे लगता है की कृषि के प्रति रूचि जगाने के बाद कृषि व्यवस्था से जूडी हुई चीजों के प्रति रूचि जगाना, यह भी कृषि विश्वविद्यालयों के कर्तव्य क्षेत्र का एक हिस्सा होना चाहिए । कृषि विश्वविद्यालयों का काम केवल कृषि विज्ञान की शिक्षा देना और कृषि विज्ञान और उनसे जूडे जो अन्य विज्ञान हैं उनके स्नातकों को तैयार करना, इतना ही नहीं है । और जो टेक्नोलोजी यहाँ विश्वविद्यालयों में सिखाई जानी हैं, उस टेक्नोलोजी को किसानों तक पहुँचाना, सम्प्रेशित करना, इतना ही दायित्व नहीं है । बल्की गाँवों की उभरती हुई युवा शक्ति, युवा पीढी में कृषि के प्रति ममत्व और अनुराग जगे, इसकी चिंता कैसे हो ? क्या यह बात हमारे कृषि विश्वविद्यालयों के चिंतन का और सोच का हिस्सा बन सकती है कि नहीं ? और वे उन विधियों को विकसित कर सकते हैं कि नहीं, जो हमारे गाँव के युवकों को कृषि की ओर मोडे, उनको कहो । गुजरात की प्रशंसा की गई हमारे विद्वान वक्ता श्री अरविंद जी के द्वारा और गुजरात का राज्यपाल होने के नाते, गुजरात की प्रशंसा सुनकर स्वाभाविक रूप से मुझे भी प्रसन्नता होती है । गुजरात के कृषि विकास की ऊँची दर है और जब भारत में कृषि विकास की तुलनात्मक प्रगति की चर्चा होती है तो स्वाभाविक रूप में गुजरात का नाम लिया जाता है । इसमें गुजरात के विश्वविद्यालयों का बहुत बडा योगदान है । इसमें यहाँ की सरकार का बहुत बडा योगदान है । और इसमें यहाँ की कुछ प्रकृति, यहाँ की कुछ इथोस, यहाँ की कुछ अस्मिता, यहाँ के कुछ स्वभाव का भी योगदान है । गुजरात के कृषि विकास के लिए औरों का जिक्र अभी मैं ना करूँ तो कम से कम गुजरात के कृषि विद्यालय, कृषि विश्वविद्यालय, कृषि संस्थान, कृषि कॉलेज और कृषि महोत्सव जैसे कार्यक्लाप और ऐसी

बजूत सी चीजें बहुत प्रशंसा के योग्य हैं, जिन्होंने गुजरात को भारत के कृषि मानचित्रों में एक ऊँचा स्थान दिलाया है । श्री अरविंद जी ने कृषि क्षेत्र की उपलब्धियों का जिक्र किया है, वो कृषि विषय के विशेषज्ञ हैं । मैं तो साहित्य का विद्यार्थी रहा हूँ, कृषि मेरा विषय नहीं था । लेकिन यह बात ठीक है की हमारे देश का उत्पादन बहुत बढा है कृषि क्षेत्र में । यह बात भी सही है कि हमारा बहुत सी चीजों का निर्यात भी बढा है और इसके कारण से हमको विदेश की मुद्रा अर्जित करने का अवसर भी प्राप्त हुआ है । तो भी कृषि के क्षेत्र में चैन से बैठने का समय आ गया है ? या हमको उन चुनौतियों को आइडेन्टीफाई करना होगा और उनके समाधान निकालने होंगे । उत्पादकता बढाना हो यह अपने आप में एक पहलू है । उत्पादकता बढाने के मार्ग में बाधाएँ क्या है ? कौन से फैक्टर्स उत्पादकता बढाने में रूकावट डालते है ? हम टेकनोलोजी की मदद से उन बाधक तत्त्वों को कैसे दूर कर सकते है ? और उत्पादकता में वृद्धि करे जिससे की अन्न के बिना देश का कोई भी नागरिक भूखा न रहे । ये दुःखद बात है कि एक ओर हम खाद्य सुरक्षा की बात करते है, बहोत सी योजनाएँ चलाते है लेकिन बडे-बडे शहरों की बात करता हूँ जहाँ पर आज भी बहोत से लोग पेट भर अन्न नहीं प्राप्त कर पा रहे है । वितरण का दोष है, नीतियों का दोष है या देश को जीतने अन्न की आवश्यकता है उसकी कमी है । कहाँ कमी है ये विचार करने की जरूरत है । और इस संदर्भ में उत्पादकता बढाना और उत्पादकता बढाने के लिए जो भी विकसित टेकनोलोजी हम इस्तमाल कर सकते है उसको करके उत्पादकता बढाये । अभी न्यूट्रीश्नल सिक्योरिटी की बात कही गई, केवल उत्पादकता बढाना नहीं, गुणवत्ता बढाना भी है । गुजरात में जब से आया हूँ तब से कभी कभार अखबारों में मैं ये समाचार पढता हूँ कि गुजरात के कुछ कुछ हिस्सों में मालन्यूट्रीश्यन है । अब एक तरफ गुजरात विश्व के आकर्षण का केन्द्र बन गया है । भारत का विकसित प्रदेश बन गया है । लेकिन यहाँ पर मालन्यूट्रीश्यन है, तो क्यों है ? क्या कारण है उसको कैसे हल किया जाये और वो न्यूट्रीश्नल वेल्यू की बात कही गई है वो भी इन कृषि वैज्ञानिकों के लिये चिंता का विषय होना जरूरी है । एक बहुत बडा सवाल है की क्या हमारा कृषक संतुष्ट है कि नहीं ? इसको नापने की जरूरत है । नापने की क्या विद्या है ? क्या तरीके हो उसके मापो । अगर कृषक संतुष्ट नहीं है, प्रसन्न नहीं है तो स्वाभाविक रूप से अधूरे मन से वो कृषि के कामों में लगेगा । वो उत्साह पूर्वक, प्रसन्नता पूर्वक कृषि कार्यों में उन्मुख हो इसलिये कृषि को लाभकारी धंधा बनाना चाहिये । क्या अब सचमुच कृषि लाभकारी

धंधा है, व्यवसाय है ? या और कृषि से बहुत ज्यादा आकर्षक अन्य एवेन्यूझ है ? अब यहाँ जो कृषि विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करके, पदवी ग्रहण करके छात्र, छात्राए निकल रहे है उनके सामने भी इस प्रकार के चयन का प्रश्न आयेगा । शिक्षा तो आपने कृषि विज्ञान में प्राप्त की है लेकिन हो सकता है कि आपके सामने कृषि से भी अधिक आकर्षक कोई और व्यवसाय का अवसर आये तो आप किसको चुनेंगे ? अगर आप कृषि को छोडकर किसी अन्य व्यवसाय की ओर आकर्षित होते है तो सवाल पैदा होता है कि आपने कृषि विज्ञान की इस विश्वविद्यालय में जो शिक्षा प्राप्त की है उसका क्या हुआ ? हम देखते हैं कि कृषक जो चीज अपने खेत में पैदा करता है उस स्तर पर जब वो बेचता है उसका जो किंमत मिलती है, जब वो चीज प्रोसेस होकर एक नेट प्रोडक्ट, एक एण्ड प्रोडक्ट के रूप में कन्झ्यूमर गुट का रूप धारण करके बाजार में आती है, बडे-बडे शहरों में आती है तो उसके दाम में कितना अंतर हो जाता है । अच्छे-अच्छे सुंदर पेकेज में बंध होकर जब कृषि पदार्थों की प्रोसेस्ड चीजें बाजार में बीकती है तो उनका दाम कितना बढ जाता है । और हम बडी खुशी से वो दाम देकर उसको खरीदते हैं । उसका लाभ हो कृषक और उसका जो अंतिम उपभोक्ता है उन दोनों के बीच में और कौन-कौन है ? जीनके पास चला जाता है ? क्या उस लाभ के उचित हिस्से को हम कृषक की ओर मोड सकते हैं ? इसके लिये हमको अपनी विवरण प्रणाली का, अपनी मार्केटींग सीस्टम का कुछ वैज्ञानिकीकरण करना होगा, कुछ सुधार करना होगा और कुछ परिवर्तन करना होगा । हमारे किसान को भी जो मोर्डन मार्केटींग सीस्टम है उसकी जानकारियाँ देनी होगी जिससे किसान का इनपावरमेन्ट हो और किसान का शोषण ना हो सके । आज जो किसान अपने खेत में कोडी के मूल्य कोई चीज पैदा करता है जब उसका प्रोसेसींग हो जाता है और वो एक सुंदर पेकेट के रूप में बाजार में बिकती है और उसी किसान को या उसके बच्चे को वो खरीदनी पडती है तो उसके मन में जरूर प्रश्न उठता होगा की मैंने जो उत्पादन किया उसका और अब जब मैं क्रेता बनकर उसको जब खरीदता हूँ तो उसमें इतना बडा गेप क्यूँ आ जाता है ? उस गेप में मेरा कोई हिस्सा है या नहीं । ये प्रश्न निश्चित रूप से उसके मन को खुरेदता होगा, परेशान करता होगा । इसकी चिंता सरकारों को, वैज्ञानिको को और जो मार्केट मेनेजमेन्ट है उसका अध्ययन करने वालो को एग्रो बिजनेश का अध्ययन करनेवालों को इनके तौर तरीके को भी विचार करना होगा । कुछ चूनौतियों का जिक्र भी अरविन्द जी ने किया है । हमारे देश की आबादी बढी है, भूमि

कम है, जल की उपलब्धता की भी कमी है । अब अगर आबादी देश की बढनी है और 2050 तक तो बहुत बढनेवाली है तो जमीन तो बढेगी ही नहीं । जल के संशाधन भी कैसे बढेंगे तो हमको भूमि का जो आदर्शतम तरीके हैं उनको निकालना होगा और यहाँ पर हमको कृषि के क्षेत्र में, टेक्नोलोजी का अधिकतम उपयोग करके सीमित भूमि साधनो और सीमित जल संशाधनों से अधिक से अधिक परिणाम निकालने का प्रयास करना होगा । विश्वविद्यालय से जो छात्र निकलते हैं, उनको हम ह्यूमन रिसोर्स कहते हैं । उसको हम मानव संशाधन कहते हैं । और जब देश विकास की तरफ बढ रहा हो, आर्थिक विकास की तरफ बढ रहा हो तो उसके ऐसे ह्यूमन रिसोर्स की जरूरत होती है । ये ह्यूमन रिसोर्स हमारे विश्वविद्यालयों में विकसित किया जा रहा है । और ये ऐसा ह्यूमन रिसोर्स है जिसमें चुनौतियों को स्वीकार करने की उमंग है । उस उमंग का अभिवादन होना चाहिये । चुनौतियों में सीमित भूमि, सीमित जल साधन और जलवायु के जोखिम, जिसका जिक्र श्री अरविन्द जी ने किया है । अभी कुछ समय पहले अहमदाबाद में एक कार्यक्रम में मुझे भाग लेने का मौका मिला । जहाँ पर बडे वैज्ञानिक इकट्ठे हुए थे । और यह जलवायु के जोखीमों का कृषि पर क्या खतरनाक असर हो रहा है इसके संबंध में जागरूकता पैदा करने और इसके समाधान खोजने में हम अपनी कृषि संबंधित सोच में प्राथमिकता दे इस बात की आवश्यकता है । एक विषय यह है कि हमारी कृषि विश्वविद्यालय, किसान के साथ जुडे है, कृषि विश्वविद्यालय और किसान इनमें जुडा हो इसलिये आप जो ज्ञान प्राप्त करते है, जो ज्ञान विकसित करते है, जो टेकनोलोजी विकसित करते है, जो नई-नई बिधियाँ खोजते है, वो हस्तांतरित हो जाय, उस तक जिसे खेत में क्रियान्वित करना है । ये खुशी की बात है कि गुजरात में ऐसे कुछ उपाय विकसित किये है जिनमें कृषि महोत्सव का जिक्र आया है और प्रसारण कार्यक्रमों में एक्सटेन्शन प्रोग्राम की इसमें बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती है । मैं आग्रह करूंगा कि हमारे विश्वविद्यालय अपने यहां पर एक्सटेन्शन प्रोग्राम को और अधिक मजबूत बनाने की चिंता करेंगे । उसका प्रयास करेंगे । मित्रो आप अब इस विश्वविद्यालय से पदवी ग्रहण करके, आप मेडल प्राप्त करके, अपनी शिक्षा पूरी करके फिर बडे समाज में दाखिल हो रहे है । विश्वविद्यालय का वातावरण एक प्रकार से महफूस वातावरण होता है , प्रोटेक्टीव वातावरण होता है । आप के अभिभावक आपकी चिंता करते है । आपके शिक्षक आपकी चिंता करते है । सरकार भी आपकी चिंता करती है जो विश्वविद्यालयों में आपके लिये

संशोधन और सुविधाएँ देते है । अब आपको विश्वविद्यालय के सुरक्षित वातावरण से बहार निकलना है तो चूनौतियां आयेगी । उन चूनौतियों का सामना करने में दो चीजे आपकी मदद करेगी । एक जो आपका आत्म विश्वास जिसका कोई विकल्प नहीं होता है । आत्म विश्वास का विकल्प अगर कोई है तो आत्म विश्वास ही है । आत्म विश्वास इन चूनौतियों का सामना करने में आपकी मदद करेगा । दूसरी बात आपका कर्तव्य बोध, अपनी जिम्मेदारियों का अहेसास और आपके कर्तव्य बोध के दो प्रकार है एक है प्रोफेश्नल रीस्पोन्सीबिलीटी । हर क्षण याद रखिये की मेरी प्रोफेश्नल रिस्पोन्सीबिलीटी क्या है ? में कृषि वैज्ञानिक हूँ, भारत की कृषि के सामने आनेवाली चूनौतियों का हल ढूंढु, कृषि विकास हो और कृषि की मजबूती हमारी अर्थव्यवस्था को मजबूत करें । इस क्षेत्र में मेरा क्या योगदान हो सकता है यह आपकी प्रोफेश्नल रिस्पोन्सीबिलीटी है जो आपको हर क्षण हर समय याद रहनी चाहिये । लेकिन प्रोफेश्नल रिस्पोन्सीबिलीटी से भी बढकर एक सोश्यल रिस्पोन्सीबिलीटी होती है । कभी-कभी इन प्रोफेश्नल रिस्पोन्सीबिलीटी के छोटे दायरे में हम घिरकर रह जाते है और जो बडी व्यापक सोश्यल रिस्पोन्सीबिलीटी होती है उसकी अनदेखी कर देते है । मुझे खुशी है कि श्री अरविन्द जी ने अपने भाषण में, समाप्ति में, जो आपकी सोश्यल रिस्पोन्सीबिलीटी है उनको एक-एक करके गिनाया है । मैं समझता हूँ कि सबसे बडी सोश्यल रिस्पोन्सीबिलीटी तो पैदा होती है सेवा की भावना से । सोश्यल रिस्पोन्सीबिलीटी का मतलब हम दूसरों से जूडे । इसका मतलब है कि हम सामाजिक बने । सोश्यल रिस्पोन्सीबिलीटी का मतलब है कि मेरा सामाजिकीकरण हो जाये । मैं अपने आपको समाज का हिस्सा मानूं । तब मैं देखूँ कि समाज के और लोगों की जो दिक्कते हैं, कठिनाइयाँ है, तकलिफें है उनको कम करने में मेरा कोइ रोल हो सकता है । अगर मैं बहुत पढलिखकर अपनी ही चिंता करूँगा और अपने केरियर की चिंता करता हूँ, कभी-कभी ऐसा होता है जो प्रोफेश्नल होते है वो केरीयरीस्ट भी हो जाते है । प्रोफेश्नल होना अच्छी बात है । प्रोफेश्नल होने का अर्थ होता है विषयों की कुशलता और निपुणता का ज्ञान होना । लेकिन इसके साथ खतरा भी है । प्रोफेश्नल कहीं केरीयरीस्ट ना हो जाये । वो सामाजिक व्यक्ति बने यह निहायत जरूरी है । शिक्षित व्यक्ति कभी-कभी आत्म केन्द्रित हो जाता है । वह अपने आप को समाज से नहीं जोडता इसलिये हमारे यहाँ जब दिक्षित समारोह हुआ करता था, गुरूकुलों में तो आचार्य पदवी ग्रहण करके समाज में जानेवाले छात्र-छात्राओं को जो दिक्षांत

भाषण में जो संदेश दिया करते थे उसका जिक्र मैंने कुछ दिन पहले नवसारी युनिवर्सिटी में भी किया था । उसीका जिक्र करके में अपना वक्तव्य पूरा करता हूँ । वो दो बातें किया करते थे, एक तो वह यह याद दिलाया करते थे कि भाई कुछ बुनियादी बाते है जिनको आप कभी न भूलना । वो बुनियादी बातें क्या है ? सत्य और असत्य इसमें से आपको चूनने के कदम-कदम पर मौके आयेंगे । सत्य को चूनुं कि असत्य को चूनुं ? तो आचार्य कहता था सत्यं वदम, सच बोलना, झूठ मत बोलना । सच बोलने की किंमत चूकानी पडेगी । क्या आप किंमत चूकाने को तैयार हो ? अगर किंमत चूकाने को तैयार नहीं हो तो सत्य कैसे बोलोगे, इसलिये सत्यं वद और दूसरी बात उसने कहा कि आखिर जीवन और समाज चलता किससे है ? क्या जीवन और समाज पैसे से चलता है ? क्या जीवन और समाज उपभोग की वस्तुओं से चलता है ? क्या ये चीजें समाज को टीका सकती है ? नहीं, समाज को तो जो चीजें टीका सकती है वो तो है धर्म । धर्म की आप कैसी भी परिभाषा कर लो । धर्म को आप अपनी सोश्यल ड्यूटी भी कह सकते हो । धर्म को आप अपना फर्ज भी कह सकते है । धर्म को आप सही और गलत के बीच में से सही का चुनाव करना भी कह सकते है । ये जो धर्म है इस पर सवाल टीकता है । तो इसलिये आचार्य कहता है कि सत्य वद धर्मम् चर, धर्म का आचरण अभी तो बहुत छोटे सूत्र है जिनका जीवन में निर्वाह कठीन है । लेकिन कठीन चीजों को स्वीकार करना, यह हमारी युवा पेढी को अपनी आदत बनानी चाहिये । मुझे पूरा विश्वास है कि यहाँ से जो स्नातक डीग्री लेकर निकल रहे है वो सत्य वद, धर्मम् चर के मार्ग पर चलेंगे । एक और बात हमारे आचार्य कहते थे कि आपके मन में मुज पर एक ऋण है, कर्ज है और मुझे इस ऋण से उऋण होना है । ये भावना है या नहीं ? आप जानते है कि जब आपके मन में यह भावना होती है कि मुज पर ऋण है और मुझे उस ऋण से उऋण होना है तो मेरे व्यवहार में विनम्रता आती है, शालिनता आती है । किस किसका ऋण है हम पर ? आजकल तो एन्वायरमेन्ट की बहुत बात होती है । प्रकृति का कितना ऋण है हम पर, प्रकृति के देवताओं को चाहे वो सूर्य हो, चन्द्र हो, नदीयां हो, बादल हो, वृक्ष हो, वनस्पति हो, धरती हो, कितना देती है यह । सुमित्रा नंदन पंत जी की एक कविता है, कविता का शिर्षक है 'धरती कितना देती है' कभी पढने का अवसर मिले तो वो कविता आपको रोमांचित करेगी । उसमें कवि कहता है कि मैंने एकबार एक कली का बिज ऐसे ही फेंक दिया था अपने आंगन में । क्या देखता हूँ कुछ दिनों में उस में अंकुर निकल आया है । क्या देखता हूँ क्या

देखता हूँ बेलो के रूप में प्रकट हो गया । क्या देखता हूँ कि मेरा सारा आंगन लहलहा उठा है । और कवि कविता का अंत करता है कि धरती कितना देती है पर इस धरती में जो हम बोयेंगे, वही धरती हमें देंगी । हम इसमें अच्छाई बोयेंगे तो अच्छाई देंगी । इसमें हम ईर्ष्या के बीज बोएगे, घृणा के बीज बोएगे तो धरती वही देगी । इसलिये हमको अगर समाज से उऋण होना है तो हम समाज में अच्छी बातों के चीज बोए और ऋण मुक्त हो । हमारे माता-पिता का ऋण है कि नहीं हम पर और ये जो फैकल्टी मेम्बर्स बैठे है, यहाँ पर आचार्य बैठे है, कुलपति बैठे है यहाँ पर इनका ऋण कितना है आप पर, जिन्होंने अपने ज्ञान को आप में ट्रान्सफर किया है । अपने ज्ञान को, अपनी विद्वता को उन्होंने आप में संक्रमित किया है । इनका कर्ज है आप पर । इसलिये गुरूकुल के दिक्षांत भाषण में जहाँ सत्यं वद, धर्मम् चर की बात कही जाती थी वहा यह भी कहा जाता था मातृदेवो भवः, पितृदेवो भवः, आचार्यदेवो भवः । मातृदेवो भवः, पितृदेवो भवः, अपने माता पिता को, पूर्वजो को याद करो जिनके उपक्रम का ऋण हम पर चढा हुआ है और फिर आचार्यदेवो भवः आपके फैकल्टी मेम्बर्स यहाँ बैठे है जिन्होंने अपने जीवन में जो कुछ ज्ञान अर्जित किया है उसको योग्य पात्र समझकर आपमें उडेल दिया है । इनका भी ऋण आप पर है तो इन सब ऋणों का भी बराबर ध्यान रखेगे तो प्रोफेश्नल रिस्पोन्सीबिलीटी के साथ एक सोश्यल रिस्पोन्सीबिलीटी का भाव भी मन में जगेगा । मैं समझता हूँ कि हमारे विश्वविद्यालयों को प्रोफेशनली कोम्पीटेंट रिस्पोन्सीबल और सोश्यली रिस्पोन्सीबल इस प्रकार के लोग तैयार करें और जूनागढ कृषि विश्वविद्यालय इसी तरह के लोग तैयार करनें में लगा है । मैं एक बार श्री अरविन्द जी को इस बात के लिये धन्यवाद देना चाहूँगा कि मैं कृषि का तो छात्र नहीं हूँ लेकिन उनके भाषण को मैंने रूचिपूर्वक सुना है और उससे बहुत सी चीज मुझे प्राप्त हुई है । मैं यहाँ के छात्र-छात्राओं को पदवी ग्रहण की बहुत बधाई देता हूँ । यहाँ के फैकल्टी मेम्बर्स को बधाई देता हूँ । और एक बहुत अच्छी बात में देखता हूँ कि यहाँ के किसी भी कृषि विश्वविद्यालयों का दिक्षांत समारोह हो, तो दूसरे विश्वविद्यालयों के कुलपति यहाँ आते है । इतनी सरसता, इतनी समरसता इस गुजरात प्रान्त में है मैं यहाँ आकर अपने आप को भी बहुत धन्य समझता हूँ और आपको बहुत-बहुत बधाईयाँ ।